RNI-UTTHIN/2013/51284

|| श्रीः ||

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

ISSN-0975-8739

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

श्री जयराम आश्रम

भीमगोडा, हरिद्वार-249401

☎: (01334)-261735, फैक्स : 260334

ईमेल : jairamsandesh@gmail.com

website : www.jairamashram.org

पत्राङ्क JRA/March/14/1

दिनाङ्क 05.03.2026

संरक्षक :

प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी

परमाध्यक्ष

जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल

प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)

डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)

प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)

प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक

प्रो. शिवशंकर मिश्र

ना कुलगुरु-मप्र.संस्कृतविश्वविद्यालय, उज्जैन

मोबाइल नं 09411171081

shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल

प्रो० जे.के.गोदियाल (पौड़ी)

प्रो० रामबहादुर शुक्ल (जम्मू)

प्रो० रामनारायण द्विवेदी (वाराणसी)

प्रो० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)

प्रो० संगीता मिश्रा (ऋषिकेश)

प्रो० रामविनय सिंह (देहरादून)

डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

डॉ० विजय गुप्ता (दिल्ली)

डॉ० मनमुद्रित नारायण शुक्ल (प्रयागराज)

**

प्रूफ संशोधक

स्वामी नाथ

आदरणीय महोदय,

....

सादर प्रणाम!

संस्कृतं संस्कृतिः मूलं, ज्ञानस्य परमं निधिः।
येन विना न शोभन्ते, भारतस्य परम्पराः॥

संस्कृत भाषा भारतीय सभ्यता की आत्मा है। यह प्राचीनतम भाषा हमारी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह भाषा हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यह देववाणी है, जिसमें उच्चारित प्रत्येक शब्द में एक दिव्य ऊर्जा और आध्यात्मिक शक्ति निहित है। जब हम संस्कृत के मन्त्रों का उच्चारण करते हैं, तो केवल शब्द नहीं बोलते, बल्कि अपने भीतर की चेतना को जागृत करते हैं।

वेद, उपनिषद, गीता और पुराणों में जो ज्ञान सञ्चित हैं, वह मानव जीवन को सही दिशा प्रदान करते हैं। संस्कृत हमें केवल पढ़ना-लिखना नहीं सिखाती, बल्कि यह जीवन जीने की कला सिखाती है। यह भाषा हमें सत्य, धर्म, करुणा और आत्म-साक्षात्कार का मार्ग दिखाती है। आज की भागदौड़ भरी दुनिया में, जब मन अशान्त और विचलित रहता है, तब संस्कृत के श्लोक और मन्त्र हमें मानसिक शान्ति और आत्मिक सन्तुलन प्रदान करते हैं। "ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः" का उच्चारण मात्र ही हमारे भीतर शान्ति की अनुभूति कराता है।

संस्कृत भाषा के उदय, सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान आदि विषयों पर केन्द्रित जयराम सन्देश पत्रिका का अग्रिम अंक **"संस्कृत भाषा विशेषांक"** के रूप में प्रकाशित किया जाना है। अतः आपसे अनुरोध है कि संस्कृत भाषा से सम्बन्धित विषयों को केन्द्रित कर अपनी रचनाएँ दिनांक 20 मई 2026 तक प्रकाशनार्थ प्रेषित करने का कष्ट करें।

विशेष- कृपया अपना शोधपत्र A Gautam /Krutidev10 में टाइप किया हुआ अथवा सुस्पष्ट अक्षरों में पृष्ठ के एक भाग में लिखा हुआ (2000 शब्दों में) ई-मेल/डाक द्वारा प्रेषित करने का कष्ट करें।

(प्रो० शिवशङ्कर मिश्र)